नीतिवचन 9:6 (ESV) कहते हैं: “अपने भोलेपन को छोड़ो और जीवित रहो; समझदारी के मार्ग पर चलो।”
(नीतिवचन 9:6 NIV: “अपने भोलेपन को छोड़ दो और तुम जीवित
रहोगे; समझदारी के मार्ग पर चलो।”)

धर्मग्रंथ में, बिना समझ के व्यक्ति को “मूर्ख” कहा जाता है। ईश्वर का वचन गंभीर चेतावनी देता है: “मूर्खों, अपनी मूर्खता से पलटो ताकि तुम जीवित रहो, और समझदारी के मार्ग पर चलो।” यह ताना नहीं है—यह दिव्य मार्गदर्शन है। लगातार पाप और मूर्खता में रहना विनाश की ओर ले जाता है (देखें नीतिवचन 1:7, ESV: “प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है; मूर्ख ज्ञान और शिक्षा का तिरस्कार करते हैं।”)

समझ क्या है?

बाइबिल के दृष्टिकोण में समझ केवल ज्ञान या सांसारिक बुद्धि नहीं है। बाइबिल सच्ची समझ को नैतिक विवेक और ईश्वर के प्रति श्रद्धा के रूप में परिभाषित करती है।
यॉब 28:28 (NIV) कहता है: “प्रभु का भय—यही बुद्धि है, और बुराई से दूर रहना समझ है।”

प्रभु का भय: यह डर नहीं बल्कि सम्मान, श्रद्धा और ईश्वर
की सत्ता के प्रति समर्पण है। यही बुद्धि और नैतिक
स्पष्टता की नींव है।

बुराई से दूर रहना: समझ पाप से सचेत दूरी अपनाने में प्रकट
होती है—चाहे वह यौन पाप, शराबखोरी, मूर्तिपूजा, हिंसा या घमंडपूर्ण व्यवहार हो।

इस प्रकार, जो व्यक्ति सक्रिय रूप से पाप से लड़ता है और धर्म के मार्ग पर चलता है, वह सच्ची समझ प्रदर्शित करता है, चाहे उसका सांसारिक दर्जा या बौद्धिक उपलब्धियां कैसी भी हों।

सांसारिक बनाम आध्यात्मिक बुद्धि

अक्सर लोग बुद्धि को शिक्षा, पेशेवर सफलता या धन से जोड़ते हैं। बाइबिल इसके विपरीत बताती है:

अत्यधिक शिक्षित व्यक्ति जो पाप का गुलाम रहता है, वह अभी
भी मूर्ख है (देखें 1 कुरिन्थियों 3:18-19, ESV: “कोई भी
स्वयं को मूर्ख न ठाने। यदि तुम में से कोई इस युग में खुद
को ज्ञानी समझता है, तो वह मूर्ख बन जाए ताकि वह सच्चा
ज्ञानी बन सके।”)

सच्ची बुद्धि ईश्वर की इच्छा के अनुरूप चलने से मापी जाती है, मानव मानकों से नहीं।

समझ के मार्ग पर

बाइबिल आदेश देती है: “मूर्ख अपनी मूर्खता से पलटकर जीवित रहे” (नीतिवचन 9:6, ESV)।
पाप से पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार और समझ संभव है।

पश्चाताप: पाप से वास्तविक वापसी (प्रेरितों के काम 3:19,
NIV: “तो पश्चाताप करो और परमेश्वर की ओर लौटो, ताकि
तुम्हारे पाप मिट जाएँ।”)

बपतिस्मा: मसीह द्वारा आदेशित सही रूप में आज्ञाकारिता
(मत्ती 28:19-20, ESV)

पवित्र आत्मा प्राप्त करना: आत्मा के निवास के माध्यम से आध्यात्मिक उपहार और विवेक (प्रेरितों के काम 2:38, NIV: “पतरस ने कहा, ‘पश्चाताप करो और यीशु मसीह के नाम में हर एक
को बपतिस्मा दो, ताकि तुम्हारे पाप क्षमा पाएं। और तुम पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करोगे।’”)

इस बिंदु पर, दिव्य समझ विश्वासियों के हृदय और मन में प्रवेश

करती है। यह बुद्धि पवित्रता और व्यावहारिक आज्ञाकारिता में निहित होती है, केवल बौद्धिक उपलब्धि में नहीं।

चिंतन

ईमानदारी से खुद से पूछें: क्या आप मूर्खता में जी रहे हैं या ईश्वरीय बुद्धि के मार्ग पर चल रहे हैं? यदि पाप अभी भी आपके जीवन पर हावी है, तो यीशु मसीह उसे दूर करने और सच्ची समझ प्राप्त करने की कृपा प्रदान करते हैं।

आइए हम ईश्वर की बुद्धि खोजें, उसकी ओर श्रद्धा में जीवन जिएँ, और इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें ताकि वे भी मूर्खता से बचें और जीवन पाएँ।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp